(कविता)

आवाज बेटी की

माँ!
मेरा कुसुर क्या था? मेरी ग़लती क्या थी?

अभी तो आँखें भी न खुली थी, मार दिया तुमने। क्या मेरी जिंदगी इतनी सस्ती थी?

मेरी ख्वाहिश थी, दुनिया देखूँ,
वो झरने, वो पहाड़, बहती नदियां, छोटे तालाब,
तालीम के वो सारे मंजर, कामयाबी का उरुज-ए-आफताब।

क्यूँ मसल दी अपने ही हाथों, खुदा की रहमत, एक बरकत, की जुनूनी ख़्वाब।

मेरे भी दिन होते, मेरे भी रात; रहती सब के बीच और साथ।

कुछ जज़्बात मेरे भी थे, अहसास मेरे भी थे।
मैं जी सकूँ भाई के साथ, माँ, ये हक़ मेरे भी थे।

मैं तेरा ख्याल भी तो रखती, दर्द में तू मुझे ही याद करती।
मैं तेरी हर बात को मानती;

जो कहती, हाँ, वही मैं करती।
क्यूँ मुझे बाहर आने से रोक दिया?

मैं भाई के हिस्से का निवाला थोड़ी न खाती।
मुझे कुछ महीने, कोख में रख, हर दर्द को तूने समझाया था।

जब तू जानी, लड़की हूँ मैं, दिल तेरा भी घबराया था।
मुझे यकीन है, तूने नही मारा होगा।

ज़रूर ये ज़ालिम दुनिया तुझे, एक बेटी के नाम, डराया होगा।

कोई बात नही, अपना ख्याल रखना, वक्त पर खाना, अपना ध्यान रखना।
मेरा ही कुसुर है कि मैं ठहरी लड़की;

हो सके तो माँ, मुझे माफ करना।
जन्नत में तेरा मैं इंतज़ार करूँगी, तू खुश रहे हमेशा, ये दुआ करूँगी।

बाबा को भी मेरा सलाम कहना, अगली बार थोड़ी उनसे भी बात करूँगी।

निखत निसार
भूगोल विभाग
2024-28.